।। ॐ संभूत्या अमृतमश्नुते ।।
संगठन से ही अमरत्व की प्राप्ति होती है।।

**मातृभूमि की धर्मध्वजा का अभिनंदन वंदन।
राष्ट्र देवता के चरणों में पावन शब्द नमन।।**

पाक्षिक
पाथेय कण

फाल्गुन शु.१ युगाब्द ५११६, वि.२०७४

१६ फरवरी २०१८

वर्ष ३३ : अंक २१

परम सुहृद पाठक-गण,

एक मित्र को और पड़ौस के गाँव/बस्ती में सदस्य बनायें

आपका वर्ष का सदस्यता शुल्क मार्च में समाप्त हो जायेगा। आपको पाथेय-कण लगातार प्राप्त होता रहे इसके लिए कार्यकर्ता आपसे आगामी वर्ष का शुल्क लेने आयेंगे।

आपसे अनुरोध है कि कम से कम एक मित्र को पाथेय-कण का सदस्य अवश्य बनायें। अपने पड़ौसी गाँव या नगर की बस्ती में यह पत्रिका नहीं जाती तो वहाँ भी एक सदस्य बनाने का आपसे आग्रह है। इसी के साथ

जय श्रीराम।

आपका
सम्पादक

सहयोग राशि

एक वर्ष ₹ 100/- पन्द्रह वर्ष ₹1000/-

प्रबंधकीय कार्यालय

'पाथेय भवन' 4, मालवीय संस्थानिक क्षेत्र,
अग्रसेन मार्ग, मालवीय नगर,
जयपुर-302017 (राज.)
सम्पर्क : 9414447123, 9929722111
0141-2529334

Website: www.patheykan.in
E-mail: patheykan@gmail.com

कासगंज का सच और सेकुलर पाखण्ड

क्या भारत में तिरंगा यात्रा नहीं निकल सकती?

अधिक पुरानी बात नहीं है, कोई सत्तर-अस्सी साल पहले की बात है। वर्ष १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में नौजवान तिरंगा लेकर निकलते थे और अंग्रेजों की लाठियाँ खाते थे। अनेक लोगों को तिरंगा फहराने के पुरस्कार में गोलियाँ भी मिलीं और वे शहीद हो गये। आजाद भारत में भी तिरंगा फहराने वाले गोलियाँ खा रहे हैं। पहले अंग्रेजों की गोलियाँ खाते थे और अब जिहादियों की गोलियाँ खा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश का एक जिला है कासगंज। जिला मुख्यालय भी कासगंज है जिसकी जनसंख्या एक लाख के आस-पास है। २६ जनवरी को कुछ देशभक्त नौजवानों ने गणतंत्र दिवस मनाने के बाद नगर में तिरंगा-यात्रा निकाली। 'भारत-माता की जय' के नारे लगाते हुये वे बड़ूडू नगर पहुँचे। यह मुस्लिम भाइयों की बस्ती है। बताया जाता है कि भारत-माता के जयकारे के जवाब में कुछ जिहादी 'पाकिस्तान जिंदाबाद' तथा 'हिन्दुस्तान मुर्दाबाद' के नारे लगाने लगे। समाचारों के अनुसार पाक समर्थक नारे लगाने के साथ बस्ती के लोगों ने तिरंगा-यात्रा का रास्ता भी रोक लिया। इस पर धक्का-मुक्की शुरु हो गई। इसी बीच एक जिहादी ने किसी मकान की छत से गोलियाँ चलानी शुरु कर दीं। एक गोली तिरंगा हाथ में लिये चंदन गुप्ता को लगी और उसने वहीं दम तोड़ दिया।

घरों में गोला-बारूद – इधर तो तिरंगा यात्रा में शामिल लोग चन्दन को सम्भालने में लगे और उधर उपद्रवियों ने मार-पीट, तोड़-फोड़ और आगजनी शुरु कर दी। कई दूकानों व वाहनों को आग के हवाले कर दिया गया। चंदन गुप्ता के शहीद होने के अतिरिक्त अनेक लोग चोटिल भी हो गये। पुलिस तथा अन्य सुरक्षा बलों की तैनाती के बाद भी तीन दिनों तक नगर में उपद्रव होते रहे। प्रशासन ने चुस्ती दिखाते हुए ३१ जन. को गोलियाँ चलाने वाले सलीम को पकड़ लिया। बताया जाता है कि उसने अपने घर की छत से ही तिरंगा यात्रा पर गोलियाँ चलाईं। कई और उपद्रवियों को पुलिस ने बन्दी बनाया है। बड़ूडू नगर बस्ती में तलाशी के समय पुलिस को भारी मात्रा में विस्फोटक व बन्दूकें भी मिलीं बताई जाती हैं।

प्राप्त समाचारों के अनुसार गोली चलाने वाले सलीम के भाई वासिम और नजीम भी पकड़ लिये गये हैं। इन तीनों के अतिरिक्त १६ अन्य जिहादियों को भी पुलिस ने चन्दन गुप्ता की हत्या का आरोपी बनाया है। कुल १२१ उत्पाती अब तक बन्दी बनाये गये हैं। इसके बाद भी शहीद चन्दन गुप्ता के पिता श्री सुशील गुप्ता को धमकियाँ मिल रही हैं। अपराधियों की धर-पकड़ के बाद कुछ लोग मोटर-साइकिलों पर आये और चन्दन के पिता को कहा कि *''हम लोग अभी बाहर हैं बाद में देख लेंगे।''* चन्दन की बहिन का घर से बाहर निकलना कठिन हो गया है, उसका भी हाल-बेहाल करने की धमकियाँ दी जा रही हैं। राज्य सरकार ने गुप्ता परिवार को बीस लाख रु. दिये हैं, →

**निपानमिव मण्डूकाः सरः पूर्णमिवाण्डजाः।
सोद्योगं नरमायान्ति, विवशाः सर्वसम्पदः।।**

पुरुषार्थी मनुष्य के पास सफलता और सारे ऐश्वर्य ऐसे खिंचे चले आते हैं जैसे मेंढक पानी के गड्ढे और बत्तख सरोवर की ओर अपने-आप चले जाते हैं।

(हितोपदेश- मित्रभेद/१७२)

प्रसंग

रात भर बालक को गोद में लिये बैठी रहीं

भगिनि निवेदिता २८ जनवरी १८९८ के दिन मार्गरेट नोबल के रूप में भारत आईं। नव-संवत्सर अर्थात् विक्रमी संवत् १९५५ के शुभारम्भ के पावन दिवस (२५ मार्च १८९८) पर वे दीक्षा ले कर भगिनि निवेदिता हो गईं। छह महीने के बाद उन्होंने कोलकाता में भारतीय बालिकाओं को शिक्षित करने के लिये कन्या पाठशाला शुरु कर दी। कोलकाता में लोग अब भगिनि को पहचानने लगे।

वर्ष १८९९ को देश में प्लेग का प्रकोप हो गया। मार्च माह में कोलकाता भी इसकी चपेट में आ गया। उस समय तक इस महामारी की कोई प्रभावी दवा नहीं थी। वैसे भी अंग्रेजों को भारतीयों के मरने की कोई चिन्ता नहीं थी, इसलिये सैकड़ों लोग प्रति-दिन काल का ग्रास बनने लगे।

रामकृष्ण मिशन ने रोगियों की सेवा के लिये **प्लेग समिति** बनाई और उसका अध्यक्ष भगिनि को बनाया। उन्होंने तुरंत पूरे काम को कई टोलियों में बाँट दिया और रात-दिन प्लेग-पीड़ितों की सेवा में जुट

गईं। उनकी संगठन क्षमता, सेवा-भावना और अथक परिश्रम करने की क्षमता उस समय प्रकट हुई।

विश्व-कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने उनके लिए कहा-*मातृत्व प्रत्यक्ष रूप धारण कर भगिनि निवेदिता के रूप में पृथ्वी पर उतर आया था।* भगिनि प्रातःकाल से ही काम में जुट जातीं। गंदी नालियों की सफाई, कूड़े के ढेर उठाना तथा घरों की सफाई से लेकर रोगियों की देख-भाल तक का काम वे करती थीं। प्लेग के कीटाणुओं को मारने के लिये घर की पुताई एक प्रभावी उपाय है। दोपहर में भगिनि सफेदी ले कर निर्धन बस्तियों में घरों की सफाई करने में जुट जातीं।

एक दिन वे बाग बाजार की पिछड़ी बस्ती में घूम रहीं थी। तभी एक व्यक्ति ने उन्हें बताया कि एक बालक की स्थिति बड़ी गम्भीर है। भगिनि तुरंत उस झोंपड़ी में पहुँची। उन्होंने देखा कि चारों ओर गन्दगी का साम्राज्य है। एक जीर्ण-शीर्ण बिस्तर पर बच्चा पड़ा है और उसकी माँ कोने में बैठी रो रही है। भगिनि ने पहले तो घर की सफाई की फिर बच्चे की माँ को ढाढस बंधाते हुए बालक को दवा दी। उसके बाद स्वयं बच्चे को अपनी गोद में ले जमीन पर बैठ गईं। रात भर वे उसे गोद में लिये बैठी रहीं और समय-समय पर दवा देती रहीं। भगिनि निवेदिता की सेवा से बालक के प्राण बच गये। ❑

– ***केदार चतुर्वेदी**, जयपुर*

→ लेकिन रुपये सुरक्षा नहीं कर पायेंगे न ही इनसे चन्दन वापस लौट सकेगा।

तिरंगा फहराना अपराध- देश में आज यह स्थिति क्यों बन गई है कि गणतंत्र दिवस पर तिरंगा-यात्रा निकालने वालों को गोलियों का सामना करना पड़ रहा है? क्या भारत माता की जय बोलना या राष्ट्र-ध्वज का सम्मान करना अपराध है? देश विभाजन के पूर्व जो स्थितियाँ थीं वैसी की वैसी आज भी दिखाई देने लगी हैं। स्वतंत्रता के पहले अल्पसंख्यकवाद और तुष्टीकरण का जो खेल शुरु हुआ था वह आज अपने वीभत्स रूप में दिखाई पड़ रहा है। सेकुलर-लिबरल-नक्सल गठजोड़ ने स्वतंत्रता के समय भारत विभाजन करवाया और आज ये तीन तिलंगे देश के कई टुकड़े करवाने के षड़यंत्र में जुटे हैं। जे.एन.यू. वास्तव में जूनियर नक्सल विवि का रूप ले चुका है। दो साल पहले वहाँ भारत के 'हजार टुकड़े' करने के जो नारे लगे थे वे केवल नारे नहीं थे। लम्बे समय से देश को कई टुकड़ों में बाँट देने का कुत्सित प्रयास चल रहा है।

कासगंज के जिहादी दंगों का समाचार २८ जन. के समाचार पत्रों में छपा। सभी ने इसे दो समुदायों का संघर्ष बताया। इन सेकुलरवादियों ने यह नहीं लिखा कि कासगंज में तिरंगा यात्रा पर जिहादियों ने गोलियाँ बरसाईं। अंग्रेजी समाचार-पत्रों की तो खोजी प्रवृत्ति सक्रिय हो गई। एक अंग्रेजी दैनिक ने लिखा कि यात्रा वाले उकसाने वाले नारे लगा रहे थे। दैनिक जागरण या पंजाब केसरी जैसे दैनिकों के अतिरिक्त सभी ने तिरंगा-यात्रा निकालने वालों को ही दोषी बता दिया।

मुँह सीं लिये – एक भी विपक्षी दल ने घटना की निन्दा नहीं की। किसी ने नहीं कहा कि तिरंगा-यात्रा पर हमला पूरे देश का अपमान है और दंगाइयों को कड़ी सजा मिलनी चाहिये। ज्ञानी-जनों का कोई गुट दिल्ली के जन्तर-मन्तर या जयपुर के स्टेच्यू सर्किल पर मोमबत्तियाँ लिये चन्दन को श्रद्धांजलि देने नहीं आया। ज्ञानियों ने अपने मुँह बन्द कर लिये और अपनी कलम को कहीं छिपा दिया। बड़े हाहाकारी सम्पादकीय या अग्रलेख लिखने वाले पण्डितों ने भी कुछ नहीं लिखा। जब लिखा या बोला तो यही लिखा कि **जोशीले नौजवानों को मुस्लिम बस्ती में नहीं जाना चाहिये था।**

यही मानसिकता जिहादियों और राष्ट्रद्रोहियों को मजबूत बनाती है, उन्हें मन-मानी करने की छूट देती है। वोट और सत्ता के लालच में समाज को जाति, वर्ग, भाषा, ऊँच-नीच आदि में बाँटने का यह षड़यंत्र अभी और तेज होगा। सेकुलर गठजोड़ अब पूरी ताकत से तुष्टीकरण और हिन्दू-विरोध करेगा। बड़े धैर्य और मानसिक-संतुलन के साथ इनको निष्प्रभावी करने की लड़ाई लड़नी होगी। ❑

टोरंटो का योग-केन्द्र वहाँ के शिक्षा-बोर्ड का सलाहकार है

कनाडा के प्रमुख नगर टोरंटो में **शिवानन्द योग वेदान्त केन्द्र** गत चार दशकों से वहाँ के निवासियों को योग और प्राणायाम करना सिखा रहा है। इस केन्द्र ने इतना काम किया है कि टोरंटो के माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने इसे अपना सहयोगी बना लिया है। स्कूलों में पढ़ने वाले सभी बालकों को योग की शिक्षा देने की पूरी योजना यह योग-केन्द्र ही बनाता है। इसका परिणाम यह है कि टोरंटो के स्कूलों में पढ़ने वाले सभी बालक-बालिकाएं नियमित योग का अभ्यास करते हैं।

ऋषिकेष के स्वामी शिवानन्द जी के शिष्य स्वामी विष्णुदेवानन्द ने टोरंटों में यह केन्द्र शुरु किया था। योग सिखाने के साथ-साथ यहाँ अन्यों को योग सिखाने वाले भी तैयार किये जाते हैं। कई देशों के शिक्षक और शिक्षिकाएं यहाँ हठ-योग का प्रशिक्षण देते हैं। इनमें से एक हैं सिल्विया वुकादिनोविक। पूर्व यूगोस्लाविया में उनका जन्म हुआ था। पच्चीस साल की आयु में स्वामी विष्णुदेवानन्द का प्रवचन सुन कर उनके साथ टोरंटो आ गईं।

इस समय वे ५३ साल की हैं। शिवानन्द आश्रम में आने के बाद उन्होंने अपना नाम सरस्वती रख लिया और भारत के प्रह्लाद रेड्डी से विवाह कर लिया। दोनों पति-पत्नी ही इस योग केन्द्र के संचालक हैं।

सिमाने सोथियर्स कनाडा की ही हैं। वे बताती हैं कि आसन एवं ध्यान करने से उन्हें अपूर्व शान्ति का अनुभव हुआ। इसलिये वे भी इस योगाश्रम का हिस्सा बन गईं।

योग और भारतीय जीवन दर्शन पश्चिम के अनेक लोगों को आकर्षित कर रहा है। ❑

पक्ष का विचार

सच्चा धर्म देशभक्ति से प्राप्त होता है। देश-भक्ति का संचार हमारे हृदय से स्वार्थ को निकाल कर फेंक देता है। हम अदूरदर्शी, स्वार्थी और खुशामदियों की तरह ऐसे कार्य कदापि न करें जिससे कि देशवासियों को हानि पहुँचे।

– प.मदन मोहन मालवीय

थाईलैण्ड में भी है ब्रह्मा जी का मन्दिर

*ऐसा कहा जाता है कि ब्रह्मा जी का दुनिया का एक-मात्र मन्दिर तीर्थराज पुष्कर में है लेकिन अन्य स्थानों पर भी ब्रह्मा मन्दिर है। वैसे तो भारत में भी कुछ स्थानों पर ब्रह्मा जी के मन्दिर हैं और अन्य देशों में भी आदि देव के मन्दिर हैं। पितामह का एक मन्दिर थाईलैण्ड की राजधानी बैंकाक में भी है जो **ईरावन** तीर्थ के नाम से जाना जाता है।*

यह मन्दिर अधिक पुराना नहीं है। मात्र बासठ साल पहले वर्ष १९५६ में यह बन कर तैयार हुआ। जहाँ यह मन्दिर है उसके पास १९५० में ईरावन नाम का होटल बनाने का काम शुरु किया गया। काम शुरु तो हो गया पर कई बाधाएं आ रहीं थीं। कभी नया बना हिस्सा टूट जाता, कभी मजदूरों की मृत्यु हो जाती। परेशान होकर होटल बनाने वाले ने महाप्रोम नाम के ज्योतिषी की शरण ली। उसने सलाह दी कि पास में एक ब्रह्मा मन्दिर बनवा दिया जाये तो बाधाएं नष्ट हो जायेंगी। ऐसा ही किया गया। होटल से कुछ दूरी पर पितामह ब्रह्मा का मन्दिर बनाया गया। इसमें सोने की मूर्ति स्थापित की गई। इसके बाद बिना किसी रुकावट के होटल भी बन गया।

इसीलिये इसे ईरावन तीर्थ कहा जाता है। थाईलैण्ड में ब्रह्मा जी का नामकरण फ्रा-फ्रोम हो गया है। इंदोनेशिया के जावा में भी पितामह ब्रह्मा जी का भव्य मन्दिर है।

राष्ट्रवादी इतिहासकार

पुरुषोत्तम नागेश ओक

स्व. पी.एन.ओक एक उत्कृष्ट और क्रांतिकारी इतिहासकार थे। भारत और पूरी दुनिया के इतिहास को उन्होंने एक नई दृष्टि से देखा और तथ्यों की कसौटी पर खरा उतरने वाले इतिहास का सृजन किया। वे आजाद हिन्द फौज के एक सेनानी यानी कि सैनिक थे और सैनिक की ही सकारात्मकता, पैनी दृष्टि और अनुशासन के साथ उन्होंने तथ्यों की खोज की। चार खण्डों में उनका लिखा 'वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास' एक अनुपम ग्रन्थ है। वे एक सफल पत्रकार भी थे। इसीलिये पत्रकारिता की खोजी नजर के साथ यह उत्कृष्ट ग्रन्थ उन्होंने लिखा। पूरी दुनिया में हिन्दू संस्कृति के अवशेष और चिह्न बिखरे हुए हैं। दक्षिणी–पूर्वी एशिया तो आज भी वैदिक संस्कृति से ओत–प्रोत है, पर अमरीका, यूरोप, अफ्रीका और आस्ट्रेलिया में भी हमारी श्रेष्ठ परम्पराओं और जीवन–मूल्यों के विद्यमान होने के प्रमाण हैं। यहाँ तक कि पश्चिम एशिया में भी ईसाइयत और इस्लाम के उदय के पहले हिन्दू संस्कृति को मानने वाले ही थे।

पुरुषोत्तम नागेश ओक ने बताया कि सऊदी अरब में शैव अर्थात् भगवान् शिव शंकर की उपासना करने वालों का प्रभुत्व था। मक्का में सौ से अधिक मन्दिर थे, जिनके अवशेष आज भी मौजूद हैं। अकाट्य प्रमाणों के आधार पर श्री ओक ने यह सिद्ध किया। नया शोध करने वालों को कई बार सम–कालीन विद्वान महत्व नहीं देते लेकिन कुछ समय बाद उनकी खोज पथ–प्रदर्शक बन जाती है। पी.एन.ओक जो ज्योतिष शास्त्र के भी प्रकाण्ड विद्वान थे, को भी स्वीकृति अब मिलने लगी है। आगे आने वाले समय में उनका लेखन मूल्यवान और दिशा देने वाला सिद्ध होगा।

श्री पुरुषोत्तम नागेश ओक का नाम राष्ट्रवादी सत्यान्वेषी इतिहासकारों में बहुत सम्मानित है। उनका जन्म २ मार्च १९१७ को इन्दौर में श्री नागेश ओक तथा श्रीमती जानकी बाई के घर में हुआ था। उन्होंने १९३३ में मैट्रिक, १९३७ में बी.ए. १९३९ में एम.ए. तथा १९४० में कानून की परीक्षा मुम्बई विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की।

१९३९ में द्वितीय विश्वयुद्ध प्रारम्भ होने पर श्री ओक सेना में भर्ती हो गए। आठ माह के प्रशिक्षण के बाद उन्हें सिंगापुर भेज दिया गया। वहां वे जापानियों द्वारा बन्दी बना लिए गए, पर जब भारतीय सैनिकों ने आजाद हिन्द फौज में शामिल होने का निश्चय किया तो सभी साठ हजार बन्दियों को छोड़ दिया गया। श्री ओक भी आजाद हिन्द फौज के अधिकारी बन गये और सेगांव (वियतनाम) रेडिया से भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार करते रहे। आगे चलकर वे नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के निकट सहयोगी बन गए।

स्वतंत्रता के बाद वे पत्रकारिता के क्षेत्र में उतरे तथा १९४७ से १९५३ तक हिन्दुस्तान टाइम्स और स्टेट्समैन के दिल्ली में संवाददाता रहे। १९५४ से १९५७ तक वे भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में प्रचार अधिकारी रहे। बाद में १९५९ से १९७४ तक दिल्ली स्थित अमरीकी दूतावास की सूचना सेवा में उप सम्पादक पद पर काम किया। इन सब कामों के बीच ओक अपनी रुचि के अनुकूल इतिहास लेखन भी करते रहे। श्री ओक के खोजपूर्ण लेखन ने भारतीय इतिहास के क्षेत्र में क्रान्ति ला दी।

श्री ओक का मानना था कि विदेशी हमलावरों और उपनिवेशवादी शक्तियों के पोषक विदेशी इतिहासकारों और उनके पिछलग्गू भारतीय इतिहासकारों ने हमारे इतिहास को जान–बूझ कर पक्षपाती मानस से तोड़ा–मरोड़ा है। इन छद्म इतिहासकारों ने आक्रमणकारियों का महिमा–मण्डन और हर स्वदेशी बात का अवमूल्यन किया है। वह वास्तव में इतिहास नहीं, इतिहास का उपहास है तथा तिरस्करणीय है। सच्चे भारतीय इतिहास को सामने लाने के लिए उन्होंने १९६४ में 'भारतीय इतिहास पुनर्लेखन संस्थान' की स्थापना की और उसके माध्यम से नये शोध सामने लाते रहे।

अपने शोधों के आधार पर श्री ओक का मत था कि ईसा से पूर्व सारी दुनिया में वैदिक संस्कृति और संस्कृत भाषा का चलन था। यही नहीं भारत में जिन भवनों को मुगलकालीन निर्माण बताते हैं, वे सब भारतीय हिन्दू शासकों द्वारा निर्मित हैं। मुस्लिम शासकों ने उन पर कब्जा किया और कुछ फेर–बदल कर उसे अपने नाम से प्रचारित कर दिया। स्वतन्त्रता के बाद भारत सरकार ने भी सच को सदा दबाकर रखा। श्री ओक ने ऐसे तथ्य प्रस्तुत किये, जिन्हें आज तक कोई काट नहीं सका है।

श्री ओक ने मराठी, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में कई लेख तथा पुस्तकें लिखीं जिनमें से ताजमहल का सच उजागर करने वाली किताबें सर्वाधिक लोकप्रिय हुई। उनकी कुछ प्रसिद्ध रचनाएं हैं :

मराठी

- हिन्दुस्तानचे दुसरे स्वातन्त्र्य युद्ध
- नेताजीच्या सहवासाल

हिन्दी

- भारतीय इतिहास की भयंकर भूलें *
- विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय *
- कौन कहता है अकबर महान था *
- दिल्ली का लाल किला हिन्दू कोट है
- लखनऊ के इमामबाड़े हिन्दू राजमहल हैं
- फतेहपुर सीकरी एक हिन्दू नगर
- आगरा का लाल किला हिन्दू भवन है*
- भारत में मुस्लिम सुल्तान (२भाग)*
- वैदिक विश्व राष्ट्र का इतिहास (४ भाग)*
- ताजमहल मंदिर भवन है
- ताजमहल तेजो महालय शिव मंदिर है
- अमर सेनानी सावरकर जीवन झांकी
- क्रिश्चनिटी कृष्ण–नीति है

(*) अंग्रेजी भाषा में भी प्रकाशित ❑

चौदह हजार फीट ऊँचाई पर चलने वाला गुरुकुल की-गोम्पा

हिन्दू धर्म के दस अवतारों में नौवें अवतार भगवान् गौतम बुद्ध हैं। बौद्ध रिलीजन भारत से पूरे दक्षिण पूर्व एशिया में फैला। भारत में भी बौद्ध-मत का खूब विस्तार हुआ। नगाधिराज हिमालय ने तपस्वियों, साधकों और अन्वेषकों को हमेशा आकर्षित किया है। बौद्ध ऋषियों ने भी हिमालय को साधना का केन्द्र बनाया और इसीलिये तिब्बत आज बौद्ध-मत का केन्द्र है। तिब्बत से सटे भारतीय क्षेत्र, विशेषकर लेह, लद्दाख और हिमाचल प्रदेश में अनेक बौद्ध मठ बने हुए हैं जो शिक्षा और साधना के केन्द्र हैं।

हिमाचल प्रदेश के लाहौल-स्पीति जिले में ही कई बौद्ध-मठ हैं। इस जिले में गर्मियों में भी तापमान शून्य के आस-पास रहता है। शीत काल में तो तापमान शून्य से बीस डिग्री नीचे चला जाता है। जिले में स्थित स्पीति नदी की घाटियों में ताबो, यांग-युद, कूंगड़ी, गेमूर, कर्दंग, तायुल, दंकर, आदि कई मठ हैं। इनमें से सबसे बड़ा बौद्ध मठ की-गोम्पा है जो लगभग १४ हजार फीट की ऊँचाई पर एक सुन्दर पहाड़ी पर बना हुआ है। इस मठ में लामाओं का निवास तो है ही, एक विद्यालय भी है जिसमें बौद्ध-दर्शन के साथ आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक की शिक्षा भी दी जाती है।

यह मठ और इसका स्कूल एक हजार साल पहले बने थे। इस क्षेत्र में रहने वालों में पहला बच्चा बौद्ध मठ को देने की परम्परा रही है। ये बालक मठ में पूरी शिक्षा प्राप्त कर लामा बनते हैं और तथागत गौतम बुद्ध की शिक्षाओं का प्रचार करते हैं। यह विद्यालय प्राचीन काल के गुरुकुलों जैसा ही है। बच्चे पूरा समय यहीं रहते हैं तथा शून्य से बीस अंश नीचे की कड़ाके की सर्दी में प्रतिदिन आठ घण्टे (प्रातः ८ से सायं ४) स्कूल में रहते हैं। बीच में एक घंटे का समय भोजन का रहता है। सायंकाल का भोजन शिक्षार्थी खुद बनाते हैं और दोनों समय के बर्तन भी स्वयं साफ करते हैं। चार साल के होते ही बालक इस मठ में आ जाते हैं।

लाहौल-स्पीति जिले के काज़ा नगर से १२ कि.मी. की दूरी पर यह की-गोम्पा है। यहाँ पहुँचने का रास्ता भी कठिन है। प्रसिद्ध रोहतांग दर्रे से यहाँ पहुँचा जा सकता है। शीत-काल में तो इस मठ का सम्पर्क शेष दुनिया से लगभग कट जाता है। इतनी कठिन परिस्थितियों में भी की-गोम्पा में रहने वाले लामा बालकों को उत्कृष्ट शिक्षा प्रदान करते हैं। ❑

अपने देश और संस्कृति को हम कितना जानते हैं

यहाँ अपने देश के इतिहास, भूगोल तथा संस्कृति सम्बन्धी दस प्रश्न दिये गये हैं। इनका उत्तर दें और परीक्षा करें कि अपने देश और संस्कृति के बारे में आप कितना जानते हैं?

१. माता सीता की खोज में सफल हो वानर-दल किष्किंधा लौटे तो खुशी में वानरों ने किस उद्यान के फल खा डाले?

२. वाणों की शय्या पर लेटे भीष्म पितामह की प्यास किस महावीर ने बुझाई?

३. 'सेरी भगवान'(श्री भगवान्) किस देश के सुल्तान की पदवी थी? अब इस दक्षिण पूर्व एशियाई देश के प्रमुख बन्दरगाह का नाम भी सेरी बगवान है।

४. गोहाटी के पास ब्रह्मपुर पहाड़ी पर कौन सा ज्योतिर्लिंग स्थित है? इसकी उपस्थिति महाराष्ट्र में भीमा नदी के किनारे भी मानी जाती है।

५. भगवद्गीता के किस अध्याय में कर्मयोग का सिद्धान्त समझाया गया है?

६. विदेशी कुषाणों को परास्त करने के लिये मगध-सम्राट पुष्यमित्र ने कलिंग के किस प्रतापी सम्राट से सन्धि की?

७. बृहस्पति ग्रह की खोज करने वाले प्राचीन भारत के खगोल शास्त्री कौन थे?

८. 'वन्देमातरम्', 'युगान्तर' तथा कर्मयोगी जैसे क्रांति का शंखनाद करने वाले समाचार-पत्रों के क्रांतिकारी सम्पादक कौन थे?

९. राजस्थान के किस महा-पराक्रमी शासक ने २५ दिसम्बर को वीरगति प्राप्त की?

१०. दिल्ली के किस प्रसिद्ध चौक के नाम के साथ पिछले दिनों हैफा जोड़ा गया?

(उत्तर इसी अंक में हैं)

चन्दन की कुरबानी

कोई हल्ला,कोई मातम, कोई क्रन्दन नहीं रहा,
कासगंज का ध्वज संवाहक,बेटा चन्दन नहीं रहा,
लिए हाथ में अमर तिरंगा,गद्दारों से छला गया,
आँखें खोलो,देखो,चन्दन गोली खाकर चला गया।

चीख सको तो चीखो,अपने भारत की बर्बादी पर,
डर सकते हो डरो,दुश्मनों की बढ़ती आबादी पर,
जान सको तो जानो,जेहादी घातक मंसूबों को,
के सरिया धरती पर उगती,अरे विषैली दूबों को।

लो देखो उन्मादी जमघट,हुआ खून का प्यासा है,
मज़हब की दुर्गंध उड़ाता,बलवा अच्छा खासा है,
वो देखो छाती पे चढ़कर आज तुम्हारी डोले हैं,
तुम घर में गमले रखते हो,वो रखते हथगोले हैं।

कासगंज की गलियों में जो दहशत खुल कर नाचा है,
श्रीराम के बेटों के गालों पर एक तमाचा है,
अरे सज्जनों,कहाँ व्यस्त हो,घर की चार-दिवारी में,
दीमक लग बैठी है शायद,तुम सब की खुद्दारी में।

बिजनिस,बीवी,बच्चे,सुख वैभव में केवल सिमटे हो,
खड़े भेड़िये घर के बाहर,तुम दौलत से लिपटे हो,
घर में मंदिर एक बनाकर,हिन्दू बनकर ऐंठे हैं,
सड़कों पर हिंदुत्व मरा है,आँख मींच कर बैठे हैं।

ये जेहाद अभी सड़कों तक, आगे भी यह होना है,
गोली खाओ,मर जाओ,बस यही तुम्हारा होना है,
मौन तुम्हारा,कायर बनकर,खुद की चिता बनायेगा,
कवि गौरव चौहान भला क्या तुमको आज जगायेगा?

जागे ना तो भीड़ बावली,हर घर आँगन फूंकेंगी।
चन्दन की कुरबानी तुम पर बरस-बरस तक थूंकेंगी।।

*- **गौरव चौहान**,इटावा (उ.प्रदेश)*

आपका स्वास्थ्य

आपका मित्र सितोपलादि चूर्ण

सितोपलादि चूर्ण एक आयुर्वेदिक औषधि है। इसका सेवन विभिन्न प्रकार के रोगों यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम, कफ, पेट सम्बन्धी रोग, गले में खरास, पुराना बुखार, अस्थमा, बदन दर्द, बच्चों में बार-बार आने वाले बुखार में लाभकारी है। सितोपलादि चूर्ण घर पर भी आसानी से तैयार किया जा सकता है।

घटक एवं बनाने की विधि – दालचीनी-१ भाग, छोटी इलायची(बीज)-२ भाग, छोटी पिप्पली-४ भाग, वंशलोचन- ८ भाग, मिश्री-१६ भाग। इन पाँच घटकों को उपरोक्तानुसार निश्चित अनुपात में लें तथा मिलाकर कूटें। यदि कूटने की व्यवस्था न हो तो मिक्सी में भी पीस सकते हैं। कुटी-पिसी हुई सामग्री को(मैदा छलनी से) छान लें। इस तैयार चूर्ण को एक हवाबंद डिब्बे (डिब्बा) में रखना चाहिये।

सेवन विधि– एक छोटा चम्मच चूर्ण (३ से ५ ग्राम) दिन में दो से तीन बार शहद में मिला कर लें। चाय या दूध में डाल कर तथा उबाल कर भी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

अन्य लाभ –

- शरीर की रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में सहायक होता है।
- हाथ-पैरों की जलन में भी इससे आराम मिलता है।
- यह चूर्ण अपच को दूर कर भूख बढ़ाने में भी सहायक है।

(मेघराज खत्री,जयपुर)

पाथेय-कण के विशेषांकों की कड़ी में
एक और विशेषांक

आगामी १ जून को प्रकाशित होने वाला अंक

धर्म-संस्कृति विशेषांक

- ***धर्म और रिलीजन क्या हैं?***
- ***संस्कृति क्या होती है?***
- ***राष्ट्र, देश और राज्य में क्या अन्तर है?***
- ***राष्ट्रीयता का क्या अर्थ है?***
- ***सेकुलर-वाद क्या है, अल्पसंख्यक कौन होते हैं?***

इसी प्रकार के प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयास इस अंक में किया जायेगा।

आप भी इन विषयों से सम्बन्धित अपनी रचना भेज सकते हैं।

अंतिम तिथि– ३० अप्रेल २०१८

– : विज्ञापन दरें :–

रंगीन कवर पृष्ठ अंतिम	**₹ ५,००,०००/–**
रंगीन कवर २ तथा ३	**₹ २,००,०००/–**
रंगीन पृष्ठ	**₹ १,००,०००/–**
सामान्य पृष्ठ (पूरा)	**₹ ५०,०००/–**
सामान्य पृष्ठ (आधा)	**₹ २५,०००/–**
सामान्य पृष्ठ (चौथाई)	**₹ १५,०००/–**

छोटी सी बालिका ने गंगा में डुबकी लगा दी

गंगा दशहरा (ज्येष्ठ शुक्ल १०) के अवसर पर काशी के घाट पर हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ लगी हुई थी। पेशवा बाजीराव द्वितीय के अनुज व उनके प्रबंधक मोरोपंत तांबे नौका पर सवार होकर दशहरे का आनन्द ले रहे थे। मोरोपंत की सात वर्षीय लड़की मनु भी इसी नाव में बैठी गंगा में तैरते हुए लड़कों को देख रही थी।

अचानक जोर-जोर से आवाज सुनाई दी। मगर... मगर ... और लोगों का ध्यान उस ओर गया। एक बहुत बड़ा मगरमच्छ पानी की ऊपरी सतह पर दिखाई दे रहा था जो घाट के पास था। शोर तेज हुआ जिसने भी सुना व देखा वह घाट से दूर जाने लगा। घाट के पास ही एक छोटा लड़का बैठा था। उसके ही ठीक बगल में यह मगरमच्छ पानी से उभर कर आया था। अपनी बगल में मगरमच्छ को देखकर वह बालक डर गया। सभी को अपनी जान बचाने की पड़ी थी। कोई भी व्यक्ति बालक को बचाने के लिए अपनी जान को खतरे में नहीं डालना चाहता था।

नाव में बैठी मोरोपंत की कन्या मनु भी यह सब दृश्य देखकर स्तब्ध थी। उसे हैरानी थी कि इतने वीरों, तैराकों के होते हुए भी कोई भी उस बालक को बचाने की कोशिश नहीं कर रहा।

आखिरकार उसने ही साहस किया। नाव से सीधे गंगा में डुबकी लगा दी। लोग देखते रह गए। छोटी-सी बालिका अपने नन्हें हाथों से पानी को चीरते हुये उस बालक की ओर बढ़ चली थी। देखते ही देखते साहसी मनु उस बालक के पास पहुँची। उस बालक को हिम्मत बंधाई और देखते ही देखते तैर कर दूसरे किनारे की ओर ले आई।

सभी लोग आश्चर्य से उस जाबांज बालिका को देखकर उसकी हिम्मत की प्रशंसा किए बिना नहीं रह रहे थे। पिता ने भी अपनी बेटी को गोद में उठा कर उसका मस्तक चूम लिया। यह साहसी बालिका आगे चलकर झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के नाम से प्रसिद्ध हुई। ❑

पहचानो तो ये महापुरुष कौन हैं

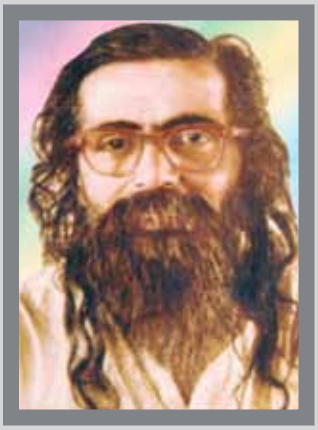

बाल मित्रों! यहाँ हमारे एक महापुरुष का चित्र तथा उनके जीवन के बारे में कुछ संकेत दिये जा रहे हैं।

संकेत के आधार पर चित्र की पहचान करें और अपने ज्ञान की परीक्षा करें।

- **आपका जन्म नागपुर में हुआ था।**
- **शिक्षा प्राप्ति के बाद आपने सन्यास ले लिया।**
- **आप एक विश्व व्यापी संगठन के ३३ वर्षों तक प्रमुख रहे।**

बाल प्रश्नोत्तरी

बाल मित्रों! इस अंक में भारतीय संस्कृति से संबंधित दस प्रश्न पूछे जा रहे हैं। प्रश्नों के उत्तर चार विकल्पों में दिये गये हैं जिनमें से एक उत्तर सही है। इस उत्तर को ढूंढ़ो और अपने सामान्य ज्ञान की परीक्षा लो।

१. भगवद्गीता के रचयिता कौन हैं?
(अ) श्रीकृष्ण (ब) महर्षि वेदव्यास (स) महर्षि वाल्मीकि (द) ऋषि मार्कण्डेय

२. पुराणों की संख्या कितनी है?
(अ) पन्द्रह (ब) सोलह (स) सत्रह (द) अट्ठारह

३. सबसे प्राचीन वेद कौन सा है?
(अ) ऋग्वेद (ब) सामवेद (स) अथर्ववेद (द) यजुर्वेद

४. आश्रम व्यवस्था में प्रथम आश्रम कौन सा है?
(अ) वानप्रस्थ (ब) गृहस्थ (स) ब्रह्मचर्य (द) संन्यास

५. स्वातंत्र्यवीर के नाम से कौन प्रसिद्ध है?
(अ) चन्द्रशेखर आजाद (ब) रासबिहारी बोस (स) लाला हरदयाल (द) वीर सावरकर

६. जयपुर में रहकर किस कवि ने काव्य सृजन किया?
(अ) बिहारी (ब) सूरदास (स) तुलसीदास (द) रहीमदास

७. मृत्युदण्ड स्वीकार किया, किन्तु धर्म नहीं बदला। बसंत पंचमी के दिन बलिदान होने वाला वह बालक कौन था?
(अ) हकीकत राय (ब) नचिकेता (स) खुदीराम बोस (द) प्रह्लाद

८. महारानी लक्ष्मीबाई के बचपन का नाम क्या था?
(अ) मनु (ब) पद्मा (स) झलकारी (द) सारंगी

९. स्वामी विवेकानन्द के गुरु कौन थे?
(अ) संत ज्ञानेश्वर (ब) गुरु रामदास (स) रामकृष्ण परमहंस (द) विरजानंद

१०. आर्य समाज की स्थापना करने वाले कौन थे?
(अ)महर्षि रमण (ब)राजा राममोहन राय (स) दयानन्द सरस्वती (द) महर्षि अरविन्द

(उत्तर इसी अंक में हैं)

समुत्कर्ष प्राप्ति की राजविद्या -२

मुस्लिम आक्रमणकारियों में भी संघ-निष्ठा थी

❑ प्र.ग. सहस्त्रबुद्धे

सम्पूर्ण समाज का विचार उस काल में लवमात्र भी नहीं किया गया। नागरिकों के व्यक्तिगत पापों के कारण ही समाज का पतन होता है, और पुण्याचार से समाज उत्कर्ष को प्राप्त होता है, ऐसी तत्कालीन श्रद्धा थी।

भारत के पतन का यही प्रमुख कारण रहा है। संघधर्म, संघविद्या यह ऐश्वर्य प्राप्ति की राजविद्या है। उस 'संघधर्म' की शास्त्रशुद्ध उपासना कुछ अपवाद छोड़ कर तात्त्विक पद्धति से तो किसी ने की ही नहीं परन्तु व्यवहार में भी उसका विचार नहीं किया गया। जीवन धारणा के लिए मनुष्य को समाज बनाकर रहना पड़ता है, परन्तु उस समाज का उत्कर्ष संघ-धर्म के बिना नहीं हो सकता। इसकी साधना भारतवासियों ने नहीं की। एक ही स्वामी के सेवक परस्पर संघर्ष नहीं करेंगे, एक दूसरे के विरूद्ध द्रोह नहीं करेंगे, इस प्रकार की निष्ठा का सदा व सर्वत्र अभाव ही रहा।

धर्म-तत्वों का पालन

मराठा मराठा से, राजपूत राजपूत से, कन्नड़ कन्नड़ से वैर नहीं करेगा, ऐसा तत्व भी यहाँ प्रस्थापित न हो सका। संघधर्म अथवा संघ विद्या जिसे कहना चाहिए वह यही है। भारत में आये हुए पाश्चात्य आक्रामक इस संघविद्या के अनन्य उपासक थे। भारतीयों के साथ व्यवहार में अन्याय, असत्य, धर्मभ्रष्टता का उन्होंने अवलम्बन किया, परन्तु राष्ट्र के उत्कर्ष हेतु वे सत्य, न्याय, स्वार्थत्याग आदि धर्मतत्वों का कट्टरता से पालन करते थे। उन्हें विजयश्री, समुत्कर्ष और ऐश्वर्य की सदा ही प्राप्ति होती रही।

अपने समाज की स्थिति तो ऐसी थी कि थोड़ा सा मतभेद हुआ, जरा-सी हानि अथवा लाभ का प्रसंग आ गया, तो उसी क्षण, परम्परागत शत्रु से हाथ मिलाकर, स्वजन, स्वधर्म तथा अपने ही स्वामी का मूलोच्छेदन करते किसी को लज्जा नहीं आती थी। इस प्रकार का कार्य अपने स्वत्व पर कलंक है, इस बात का विचार भी किसी के मन में नहीं आता था। किसी भी प्रकार की निष्ठा उन्हें बन्धनकारक सिद्ध नहीं हुई। सैकड़ों साल की पराजय के बाद भी इस बात का बोध नहीं हुआ कि समाज रूप से जीवित रहने के लिए संघ-निष्ठा अनिवार्य है।

एक ने भी राष्ट्रद्रोह नहीं किया

अंग्रेज और फ्रांसीसी अधिकारी यहाँ आते थे-क्या वे कभी अपमानित नहीं हुए? अधिकारियों की नीतियों से क्या वे कभी असन्तुष्ट नहीं हुए? क्या कभी उन के व्यक्तिगत स्वार्थों को चोट पहुँची ही नहीं? क्या उनमें परस्पर, द्वेष और ईर्ष्या थी ही नहीं? द्वेष था, ईर्ष्या थी, अपमान हुए, मतभेद हुए, सब कुछ हुआ। क्लाइव, वारेन हेस्टिंग्ज, मेटकाफ आदि को अनेक बार अपमानित होना पड़ा, उनमें मतभिन्नता पैदा हुई, परन्तु उनमें से एक भी मरहठों, निजाम अथवा हैदर से मिला नहीं। एक ने भी राष्ट्रद्रोह अथवा स्वजन द्रोह नहीं किया। उनकी राष्ट्रनिष्ठा, उनकी समष्टिनिष्ठा, इन सब बातों से अधिक सबल थी। मतभिन्नता, द्वेष, ईर्ष्या उसे स्पर्श नहीं कर पाती थी। और यदि कोई इस प्रकार का द्रोह करता भी तो उसके लिए अपने समाज में रहना असम्भव हो जाता।

परन्तु भारत के किसी भी समाज ने इसे पाप नहीं माना। जिसका नमक खाना, उसकी सेवा करना, इतना ही उन्हें मालूम था। गोपालराव पटवर्धन पेशवा का पराक्रमी सेनानी था। परन्तु जरा सी अनबन होते ही, वह निजाम से जा मिला और उसके साथ पूना की लूट के लिए सम्मिलित हुआ। जैसे ही पुनः मित्रता हुई वापस आया। म्लेच्छ के हाथ की रोटी खाने वाले के लिए शायद उस काल में इतनी आसानी से पुनः समाज में सम्मिलित होना सम्भव नहीं था। परन्तु स्वराष्ट्र-द्रोही, बड़ी आसानी से वापस आते थे और समाज उनका स्वागत करता था। इस बात से यह स्पष्ट है कि भारत में इस 'संघधर्म' का किसी भी दृष्टि से महत्व नहीं था। इसके अभाव में हम को पराजित होना पड़ रहा है, हमारा धर्म नष्ट हो रहा है, हमारी स्वतंत्रता मिट रही है, परतन्त्रता की बेड़ी में हमारा पैर फँस रहा है, इसका किसी को भी खेद नहीं था।

हिन्दुओं के पराक्रम से बढ़े

हमारे आश्चर्य का ठिकाना नहीं रहता, जब हम इसी कालखण्ड में प्रस्थापित मुस्लिम सत्ता के इतिहास का निरीक्षण करते हैं। उनके इतिहास के पृष्ठ भी कपट, हत्या, विद्रोह, फूट और विषप्रयोग-आदि पापों से सने हुए हैं। आपस में मार-काट और युद्ध नित्य चलता रहता था। दिल्ली की सल्तनत पर हमेशा तलवार लटकती रही। गुलाम वंश, गोरी वंश, खिलजी, तुगलक और लोदी वंश के परस्पर संघर्षों में दिल्ली का तख्त सदा डोलता रहा। अकबर के काल तक उसमें स्थिरता नहीं थी। राज्य-सत्ता के लिए-हत्याएं करना, जहर देना, भाई की आँखें निकलवा लेना, नित्य की कहानी थी। फिर भी उन्होंने सम्पूर्ण भारत पर विजय प्राप्त की तथा कुछ प्रान्त यदि छोड़ दिये जायें तो चार-पाँच सौ साल तक सम्पूर्ण भारत के शासनसूत्र सतत उनके हाथों में रहे। उनकी इस सफलता का रहस्य यदि कुछ है, तो उनकी संघनिष्ठा प्रबल थी- यही है।

मुसलमान परस्पर संघर्ष करते रहे। परन्तु राजपूत और मुसलमान के युद्ध में-मुसलमान सरदार राजपूत की ओर से लड़ते हुए-कभी कभी ही देखने को मिलते हैं। परन्तु इस प्रकार के संघर्ष में मुसलमानों की ओर से कुछ राजपूतों का लड़ना तो सामान्य नियम सा था। राणा सांगा ने बाबर से जूझने से पहले, अनेक मुसलमान सरदारों को परास्त किया तथा परास्त करने के बाद उनके साथ उदारता का व्यवहार किया।

परन्तु फतेहपुर–सीकरी की लड़ाई में वे सब के सब बाबर से जा मिले। मानसिंह, जसवन्त सिंह, जयसिंह आदि सेनापति विजय–यात्राओं पर जाते और पराक्रमपूर्वक नये प्रदेश जीत कर मुगल साम्राज्य का विस्तार करते थे। इसके विपरीत स्वपराक्रम से किसी हिन्दू राज्य का विस्तार का कार्य करने वाला एक भी मुसलमान नहीं हुआ। मुसलमान, मुसलमान के विरूद्ध लड़ा– यह उनकी संघनिष्ठा की दुर्बलता का लक्षण अवश्य है, परन्तु राजपूतों का पक्ष लेकर एक मुसलमान दूसरे के विरूद्ध लड़ा हो–ऐसे उदाहरण दुर्लभ ही हैं। अपवाद के लिए ही कुछ प्रसंग हैं।

हिन्दुओं को सदा ही पराजय का मुख देखना पड़ा क्योंकि उनकी धर्मद्रोह अर्थात् राष्ट्र–द्रोह की प्रवृत्ति अपवादात्मक नहीं थी, अपितु वह सर्वसामान्य नियम बन चुकी थी। अथवा यों कहिये कि इस बात का ज्ञान उन्हें नहीं था कि इसे धर्मद्रोह मानना चाहिए। सांघिक, सामूहिक समाज जीवन की कल्पना से वे अपरिचित हो गये थे, अतः संघद्रोह नाम की कोई बात होती है और वह समाज के लिए हानिकर होती है– इस बात से भी वे अनभिज्ञ थे।

*प्रस्तुति–**हरिशंकर भारद्वाज,** जयपुर*

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी– मधुबन, महारथी अर्जुन, ब्रुनेई, भीमाशंकर, द्वितीय अध्याय, सम्राट खारवेल,ऋषि वामदेव, क्रांतिकारी अरविन्द घोष, महाराजा सूरजमल, त्रिमूर्ति–चौक

पंचांग- चैत्र कृष्ण पक्ष

युगाब्द–५११९, विक्रमी–२०७४, शाके–१९३९
(२ से १७ मार्च २०१८ तक)

धूलण्डी, गणगौर पूजा प्रारम्भ – २ मार्च, **भाई दोज–** ३ मार्च, **चतुर्थी व्रत–** ५ मार्च, **रंग पंचमी–** ६ मार्च, **शीतलाष्टमी (बास्योड़ा)–** ९ मार्च, **पापमोचनी एकादशी व्रत–** १३ मार्च, **प्रदोष–** १४ मार्च, **पंचक–** १५ मार्च (प्रातः ४.१४ बजे) से १९ मार्च (रात ८.२० बजे) तक, **अमावस्या–** १७ मार्च

चन्द्रमा – २ मार्च **सिंह** राशि में, ३ से ५ **कन्या** में, ६–७ **तुला**, में ८–९ नीच की राशि **वृश्चिक** में, १० से १२ मार्च धनु **राशि** में, १३–१४ **मकर** तथा १५ से १७ मार्च तक **कुंभ** राशि में गोचर करेंगे।

ग्रहों की स्थिति

चैत्र कृष्ण पक्ष में **गुरु** व **शनि** तथा **राहु** व **केतु** पूर्ववत क्रमशः तुला व धनु तथा कर्क व मकर राशि में रहेंगे। **गुरु** ९ मार्च को प्रातः १०.२० बजे तुला राशि में रहते हुये वक्री होंगे। **सूर्य** १४ मार्च को रात्रि ११.४३ बजे कुंभ से मीन में प्रवेश करेंगे। **मंगल** ७ मार्च को सायं ६.२७ बजे वृश्चिक से धनु में और **शुक्र** २ मार्च को प्रातः ११.४२ व **बुध देव** ३ मार्च को प्रात ६.५४ बजे कुंभ से मीन में प्रवेश करेंगे।

तोड़ नींद अब बढ़ जाओ

यूपी है, केरल है या बंगाल है चाहे पटना है,
भारत में हिंदू का मरना केवल इक दुर्घटना है।

कासगंज में जिन लोगों ने खेली खूनी होली है,
देश में पलती पाकिस्तानी मंसूबों की टोली है।

उन्हे तिरंगे से दिक्कत है वंदेमातरम् खलता है,
उनका जीवन सिर्फ जेहादी कानूनों से चलता है।

क्या ये उसकी गलती थी वो वंदेमातरम् गाता था,
क्या ये उसकी गलती थी वो तीन रंग लहराता था।

सोच के छाती फटती है कि ये कैसी मक्कारी है,
भारत माँ की जय कहने पर उसको गोली मारी है।

चंदन नहीं अखलाक मरा होता तो बादल फट जाता,
पुरस्कार वापस करने वाला दल आकर डट जाता।

मीडिया के मक्कारों की हमदर्दी जाग गई होती,
गायब स्वप्न हुए होते और नींदें भाग गई होती।

कुछ लोगों को सहिष्णुता पे चोट दिखाई दे जाती,
कुछ लोगों को भगवे तक में खोट दिखाई दे जाती।

जज साहब को लोकतन्त्र पे खतरा दिखने लग जाता,
सारा मौसम कातिल और आवारा दिखने लग जाता।

लेकिन देशभक्त की हत्या पे छाई खामोशी है,
और नहीं कुछ ये केवल कुछ वोटों की मदहोशी है।

कहता कवि मयंक हिन्दुओं तोड़ नींद अब बढ़ जाओ,
वंदेमातरम् कहकर जालिम की छाती पे चढ़ जाओ।

अब भी ना जागे गर तुम तो तुम्हें सुलाया जाएगा,
कायर कहकर इतिहासों से तुम्हें भुलाया जाएगा।

***– मयंक शर्मा,** दुर्ग (छत्तीसगढ़)*

वे सपने भी संस्कृत में ही देखती हैं

छत्तीसगढ़ के बिलासपुर के पास गोंडपारा स्थान पर एक गुरुकुल है जहाँ संस्कृत सिखाई जाती है। बाहर के कई देशों के उच्च शिक्षा प्राप्त लोग यहाँ सब भाषाओं की जननी संस्कृत को सीखने आते हैं। इस गुरुकुल की नींव डा.पुष्पा दीक्षित ने डालीं। वे वर्ष २००१ में संस्कृत की प्रोफेसर पद से सेवानिवृत्त हुईं और इस पाणिनीय शोध-संस्थान की स्थापना की। महर्षि पाणिनि की अष्टाध्यायी को बड़ा कठिन ग्रन्थ माना जाता है क्योंकि इसमें संस्कृत का व्याकरण समझाया गया है। इस अष्टाध्यायी को पाणिनीय गुरुकुल में इस सरल रीति से पढ़ाया जाता है कि छह महीनों में व्यक्ति अष्टाध्यायी में पारंगत हो जाता है।

इस समय यहाँ नेपाल, तिब्बत, बांग्लादेश, चीन, अमरीका, जर्मनी आदि के छात्र संस्कृत सीख रहे हैं। डा.स्वरूप देव अमरीकी हैं और अमरीका में चिकित्सक हैं। उन्होंने इस शोध संस्थान में संस्कृत सीखी तथा भारतीय संस्कृति से इतने प्रभावित हुए कि अपना नाम ही स्वरूप देव रख लिया। अब वे भोजन जमीन पर बैठ कर करते हैं तथा ब्रह्म मुहूर्त में जाग जाते हैं।

शोध-संस्थान शुरु करने वाली डा. पुष्पा दीक्षित ने संस्कृत व हिन्दी में चालीस से अधिक पुस्तकें भी लिखी हैं। सर्वाधिक लोकप्रिय पुस्तक चार खण्डों में लिखी गई 'अष्टाध्यायी सहजबोध' है। संस्कृत के प्रति इस अनुराग के बारे में जब उनसे पूछा गया तो उन्होंने कहा, कि *वे सपने भी संस्कृत में ही देखती हैं।*

नार्वेवासी ने गायत्री मंत्र बोला तो लोग मंत्रमुग्ध हो गये

पूरी दुनिया के लोग मानते हैं कि पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति ही थी तथा उनके पुरखे भी भारत के ही थे। इन देशों के मूल निवासी तो आज भी भारतीय जीवन-मूल्यों में विश्वास करते हैं तथा यहाँ की परम्पराओं का पालन करते हैं। ऐसे ही लगभग पचास देशों के प्रतिनिधि पिछले दिनों भारत आये थे। २९ जनवरी को इन देशों के मूल-निवासियों के प्रमुख जयपुर भी आये। रात्रि को स्थानीय होटल जयपुर-अशोक में उनका स्वागत-समारोह आयोजित किया गया था।

समारोह के प्रारम्भ में नार्वे से आये दो प्रतिनिधियों ने जब लय के साथ गायत्री मंत्र बोलना शुरु किया तो वहाँ उपस्थित सभी लोग मंत्रमुग्ध हो उनके स्वर में स्वर मिला कर बोलने लगे।

नार्वे, स्वीडन, डेन्मार्क तथा फिनलैण्ड स्कन्दनेवियाई देश कहलाते हैं। इनके अतिरिक्त पूर्वी यूरोप के लातविया, लिथुआनिया, रोमानिया, सर्बिया तथा अमरीकी महाद्वीप के ग्वालेमाला, कोलम्बिया, पेरू, ब्राजील, वोलीविया, मैक्सिको आदि देशों में भारतीय संस्कृति का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। इन सभी देशों के मूल निवासियों का सम्मेलन प्रति-वर्ष होता है। भारत में वर्ष २००२ में इन देशों का सम्मेलन हुआ था। इस बार भी १ से ४ फर. तक मुम्बई में हुए अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में भाग लेने उक्त देशों के मूल निवासी भारत आये थे।

सोम, माही व जाखम त्रिवेणी संगम स्थल पर स्थित मावजी महाराज की तपो भूमि बेणेश्वर धाम में माघ पूर्णिमा को मुख्य मेले के दिन लाखों भक्तों ने संगम में गोते लगाए।

कानपुर में पचास हजार देशभक्तों ने वन्देमातरम् गाया

गत २६ जनवरी को गणतंत्र दिवस पर कानपुर में पचास हजार लोगों ने 'वन्देमातरम्' गाया। कानपुर क्रांतिकारियों की भूमि है। भारत के पहले स्वतंत्रता संग्राम की योजना कानपुर के पास बिठूर में बनी थी तथा शचीन्द्र नाथ सान्याल, आजाद, भगत सिंह, जयदेव कपूर जैसे क्रांतिकारियों की कर्मभूमि भी कानपुर ही रही। ऐसे इस ऐतिहासिक नगर के ग्रीन पार्क स्टेडियम में तिरंगे को सलामी देने तथा वन्देमातरम् गायन के लिये पचास हजार नगर-वासी एकत्रित हुए। कलाकारों के संगठन 'संस्कार-भारती' ने यह आयोजन किया था। ऐतिहासिक ग्रीन-पार्क मैदान में ध्वाजारोहण भी संगठन के संरक्षक पद्मश्री योगेन्द्र बाबा ने ही किया।

सीमा सुरक्षा बल के आई जी ने पूछा क्या और कहीं सेना पर पथराव होता है?

सीमा सुरक्षा बल के पूर्व महानिरीक्षक श्री भोलानाथ ने देशवासियों से प्रश्न किया है कि भारत के अतिरिक्त क्या कोई और देश ऐसा है जहाँ सेना के जवानों पर पत्थर फैंके जाते हैं? पूर्व आई जी ने 'ट्विटर' पर लिखे एक संदेश में यह प्रश्न किया है। उनका पूरा संदेश इस प्रकार है-

मेरे देशवासियों,

आप किसी राजनीतिज्ञ पर स्याही, अण्डा और जूता फैंकें तो आपको वहीं तुरंत गिरफ्तार कर लिया जायेगा। लेकिन

यदि आप सुरक्षा बलों या सेना पर पत्थर फेंकेंगे... ***तो सेना के जवानों को ही गिरफ्तार किया जायेगा।***

क्या इस प्रकार का सुरक्षा बलों पर पथराव हम किसी अन्य राज्य (कश्मीर के अतिरिक्त) या किसी दूसरे देश में देखते हैं?

अंकित सक्सेना पर चुप है सेकुलर बिरादरी

गत २ फरवरी को पश्चिमी दिल्ली की रघुवीर कॉलोनी में फोटोग्राफी का व्यवसाय करने वाले अंकित सक्सेना को चार लोगों ने चाकुओं से मार दिया। इसलिये कि उनकी लड़की शहजादी अंकित से विवाह करना चाहती थी। अठारह साल की बालिग हो चुकी लड़की मुसलमान है और उसके माँ–बाप, चाचा और भाई नहीं चाहते थे कि वह एक हिन्दू से विवाह करे। इसलिये २ फर. की शाम उन्होंने तेईस साल के अंकित को घर के बाहर बुलाया और मार–पीट करने के बाद उसे हमेशा के लिये मौन कर दिया।

सारे मामले में सबसे शर्मनाक व्यवहार समाचार–पत्रों और कुछ टीवी–चैनलों का रहा। **अधिकतर समाचार पत्रों ने तो इसका समाचार प्रकाशित ही नहीं किया।** अंग्रेजी के सेकुलरवादी अखबारों ने इसे **ऑनर–किलिंग** बता कर पल्ला झाड़ लिया। किसी ने यह नहीं बताया कि मारने वाले मुस्लिम थे। सेकुलरों के सिरमौर **इंडियन एक्सप्रेस** (४फर.) ने कन्या की व्यथा विस्तार से छापी है पर पाठकों को यह नहीं बताया कि लड़की मुसलमान है। इसी के साथ निर्लज्जता से सारा दोष अंकित के माथे मढ़ दिया है।

कल्पना करें कि अंकित के स्थान पर कोई अकरम होता तो अब तक पूरे भारत में एक तूफान आ जाता। हिन्दुत्व समर्थक संगठनों पर गालियों की बौछार हो जाती, असहिष्णुता का राग जोर से अलापा जाता और मोमबत्ती जलाने वाले तथा अवार्ड–वापसी गुट एकदम सक्रिय हो जाते। कोई मुस्लिम कन्या किसी हिन्दू से विवाह करने को न तो कट्टरपंथी मंजूरी देते हैं और न ही सेकुलर–लिबरल–नक्सल गठजोड़ स्वीकृति देता है।

म्यांमार का बदला लेने गया में धमाका किया

पश्चिमी बंगाल के धुलियाँ (जिला–मुर्शिदाबाद) में एक घर से सुरक्षा बलों ने दो टन अमोनियम नाइट्रेट जब्त किया है। इस घर में 'जमातुल मुजाहिदीन' के दो आतंकी डेरा डाले हुए थे। दोनों ने कुछ दिनों पहले गया में एक बम–विस्फोट किया था। उक्त विस्फोटकों से इस घर में बम बनाये जा रहे थे। मकान का मालिक भी इन आतंकियों का साथी था तथा अभी लापता है।

टाइम्स ऑफ इण्डिया (३फर.) के अनुसार गिरफ्तार आतंकी मोहम्मद पेगम्बर शेख ने पूछ–ताछ में बताया कि गया में जो धमाका किया गया था वह रोहिंग्या मुसलमानों का बदला लेने के लिये था। म्यांमार से जो रोहिंग्या भगाये जा रहे हैं उसका जवाब देने के लिये उन आतंकियों ने तीर्थ–स्थल गया में बम–विस्फोट किया।

बड़ा विचित्र है, म्यांमार में कोई घटना होती है तो उसका बदला लेने के लिये जिहादी भारत में निर्दोषों की हत्या करते हैं।

अयोध्या में आयोजित रामायण महोत्सव में राम, लक्ष्मण व सीता की भूमिका में थाईलैण्ड के कलाकार रामलीला की प्रस्तुति दे रहे हैं।

भारत में बनी पनडुब्बी 'करंज' नौसेना का अंग बनी

पिछले कुछ वर्षों से टैंक,लड़ाकू जहाज, युद्धक वायुयान आदि सामरिक महत्व के उपकरण भारत में ही बनाये जा रहे हैं। सागर के युद्ध के लिये अत्यंत महत्वपूर्ण पनडुब्बियाँ भी भारत में बनने लगी हैं। ऐसी ही एक स्वदेश निर्मित पनडुब्बी गत ३१ जनवरी को नौसेना को सौंपी गई। इस पनडुब्बी का नाम '**करंज**' है और पूरी तरह भारत में बनी यह तीसरी सामरिक पनडुब्बी है। अथर्ववेद की ऋचाओं एवं शंख–ध्वनि के बीच मुम्बई के प्रसिद्ध **मझगांव डॉक** पर इसको समुद्र में उतारा गया। पानी के भीतर और बाहर भी घातक यह पनडुब्बी 'स्कार्पियन श्रेणी' की है। युद्ध के समय यह बिच्छू की तरह ही डंक मारती है। यह राडार की पकड़ से बच सकती है। इसी के साथ इसमें ऑक्सीजन बनाने का संयंत्र भी लगा है।

इसी श्रेणी की आई.एन.एस. कलवरी तथा आई एन एस खांदेरी इसके पहले नौसेना में शामिल हो चुकी हैं। तीन और ऐसी पनडुब्बियों का निर्माण कार्य चल रहा है।

केरल में लव–जिहादी सुरक्षा बलों की गिरफ्त में

केरल में एक हिन्दू कन्या को जाल में फँसाने वाला लव–जिहादी मोहम्मद रियाद रशीद गत २ फर. को चेन्नई हवाई अड्डे पर सुरक्षा बलों की गिरफ्त में आ गया। वह सऊदी अरब से चेन्नई पहुँचा था।

रियाद रशीद ने एर्नाकुलम की हिन्दू छात्रा को अपने प्रेम–जाल में फँसा लिया और फिर जमाल और सैय्यद के साथ उसका शील–भंग किया। मजबूरी में कन्या को मुसलमान बन कर रशीद से निकाह करना पड़ा। विवाह के बाद वह उसे जेद्दा ले गया और दाएश (इस्लामिक स्टेट) के आतंकियों को उसे बेच दिया। वह लड़की किसी तरह आतंकियों को चमका देकर भाग निकली और भारत लौट आई। एर्नाकुलम में उसने लव–जिहादियों के कारनामों की रपट पुलिस में की। रशीद के गिरोह के जमाल और सैय्यद को पहले ही पकड़ लिया गया है।

इस्लाम न मानने की शपथ देनी होगी चीन में

पश्चिमी चीन का प्रांत **जिन-जियांग** मुस्लिम बहुल है और इसमें उईघर मुसलमान रहते हैं। एक अन्य प्रांत निंगशिया में भी 'हुआ' मुसलमान हैं। दोनों प्रान्तों में कुल मिला कर दो करोड़ दस लाख मुसलमान हैं। उन्होंने चीन सरकार की नाक में दम किया हुआ है। इनसे कड़ाई से निपटने के लिये चीन की साम्यवादी सरकार ने एक के बाद एक कई कठोर कानून बनाये हैं।

– सबसे पहले कानून बना कि चीनी मुसलमान वही कुरान रख और पढ़ सकेंगे जो चीनी भाषा और लिपि में हो।

– इसके बाद लोगों के दाढ़ी रखने और महिलाओं के बुर्का ओढ़ने पर रोक लगाई गई।

– तत्पश्चात कानून बना कि चीन में रहने वाले मुसलमानों के नाम चीनी ही होंगे, हुसैन, मोहम्मद, सैय्यद आदि नहीं।

इसके बाद भी चीन के साम्यवादी तानाशाह जिहादियों को काबू में नहीं कर पा रहे हैं। इसलिये अब एक नया नियम और बनाया गया है। चीन की साम्यवादी पार्टी के जो मुस्लिम सदस्य, कार्यकर्ता या पदाधिकारी है उन्हें एक शपथ-पत्र देना होगा कि वे इस्लाम को नहीं मानते।

इतना अत्याचार होने पर भी भारत के कामरेड या अन्य सेकुलरवादी कुछ नहीं बोल रहे। किसी अन्य देश में ऐसा हो जाता तो अब तक कई प्रदर्शन, धरने आदि हो चुके होते। इसके उलट केरल के कामरेड पिनराई विजयन ने तो गत २७ जन. को कन्नूर में चीन की जम कर प्रशंसा की और चीन को दुनिया का सबसे ताकतवर देश बताया।

अपनी गरीबी तो दूर कर ही ली नक्सली सरगनाओं ने

पूंजीवाद से लड़ते-लड़ते नक्सली गिरोहों के सरगनाओं ने अपनी जेबें भर ली हैं और पूंजीपति बन गये हैं। औरों की गरीबी वे चाहे दूर न कर पाये हों पर खुद की गरीबी तो उन्होंने दूर कर ही ली है। समाचारों के अनुसार अरविंद, संदीप यादव, प्रद्युम्न शर्मा, मुसाफिर सहनी, विजय यादव, रामचन्द्र महतो, मोहन यादव, मनोज हांसदा आदि नक्सली सरगनों ने करोड़ों की सम्पत्ति जमा कर ली है। इनके परिवार बड़ी कालोनियों में बड़े आराम का जीवन जीते हैं और बच्चे मँहगी गाड़ियों में सवार हो खर्चीले स्कूल, कॉलेजों में पढ़ते हैं।

बिहार, झारखण्ड तथा छत्तीसगढ़ की पुलिस ने ऐसे पूंजीपति सरगनों के नाम प्रवर्त्तन (?) निदेशालय (ईडी) को भेजे हैं। निदेशालय ने प्रमाण जुटा कर कार्रवाई भी की है। दैनिक टाइम्स ऑफ इण्डिया (६फर.) के अनुसार ई डी ने नक्सली कमाण्डर संदीप यादव की ८६ लाख रु की सम्पत्ति जब्त कर ली है। बताया जाता है कि गरीब वनवासियों के चन्दे, बड़े व्यापारियों से वूसले गये पैसे से ये माओवादी सरगना अपना जीवन-स्तर सुधार रहे हैं।

रोगी वाहन में ही विस्फोटक भर धमाका कर दिया

तालिबानी आतंकी और जिहादी अब निकृष्टतम स्तर तक उतर आये हैं। लोगों को मारने में वे हर तरह के निन्दनीय तरीके काम में ले रहे हैं। गत २७ जनवरी को उन्होंने एक एम्बुलेंस को विस्फोटकों से भर कर एक व्यस्त बाजार में इसमें धमाका कर दिया। यह भीषण विस्फोट अफगानिस्तान की राजधानी काबुल के मुख्य बाजार में हुआ और इसमें सौ लोग जान से हाथ धो बैठे। लगभग दो सौ अफगानी इसमें घायल हो गये।

इसके कुछ दिनों पहले आतंकियों ने काबुल के इण्टरकाण्टिनेण्टल होटल पर कब्जा कर लिया था। पूरी एक रात और दिन चले संघर्ष में १४ विदेशी नागरिकों सहित पचास लोग उस समय आतंकी हिंसा के शिकार हुए थे। अफगानिस्तान में इस समय तालिबान और दाएश (इस्लामिक स्टेट) में अपना प्रभाव बढ़ाने की होड़ चल रही है। इसके परिणामस्वरूप सैकड़ों लोग हर महीने मारे जा रहे हैं। गत एक साल में आतंकी हिंसा में दस हजार से अधिक तो सुरक्षाकर्मी ही मारे जा चुके हैं।

एक सरकार ने जयंती मनाई दूसरी ने विधानसभा में चित्र लगा दिया

आम-चुनावों में अभी साल भर से अधिक की देरी है, पर सेकुलरवादी दलों में तुष्टीकरण की होड़ अभी से शुरु हो गई है। पिछले दिनों कर्नाटक सरकार ने टीपू सुल्तान की जयंती बड़े धूम-धाम से मनाई। अब दिल्ली की राज्य सरकार ने विधान सभा में टीपू का चित्र लगा दिया है।

टीपू सुल्तान एक क्रूर और धर्मान्ध सुल्तान था। अन्य विदेशी आक्रमणकारियों की तरह उसने भी हिन्दू-समाज पर भीषण अत्याचार किये। तलवार के जोर पर टीपू ने लाखों हिन्दुओं को मुसलमान बना लिया तथा हजारों मन्दिरों को ध्वस्त कर दिया। इतिहास में उसके अत्याचारों का विवरण खूब मिलता है। फिर भी एक सेकुलर सरकार ने उसकी जयंती मनाई और दूसरे टोपी वाले सेकुलरों ने दिल्ली विधान सभा में उसका चित्र लगा दिया। मुसलमानों के एक-मुश्त वोट लेने के लिए यह पाखण्ड हो रहा है। यही चलता रहा तो औरंगजेब की जयंती भी सेकुलर जमात धूम-धाम से मनायेगी। जूनियर नक्सल विवि (ज.ने.वि.) में महिषासुर की जयंती तो मनाई ही जा रही है।

मलेशिया में थईपुसम पर्व

भगवान मुरुगन (कार्तिकेय) को समर्पित थईपुसम पर्व के अवसर पर मलेशिया की राजधानी कुआलालंपुर स्थित बंटु गुफा में २७२ सीढ़ियाँ चढ़कर दर्शन के लिए जाते श्रद्धालु।

वागदरी में लगा निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

गत २९ जनवरी को डूँगरपुर जिले के वागदरी गाँव में निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर लगाया गया। यह शिविर 'जागरण जन सेवा मण्डल' की ओर से आचार्य महाप्रज्ञ नेत्र चिकित्सालय के परिसर में लगाया गया था। यह आयोजन चिकित्सालय के १० वर्ष पूर्ण होने पर किया गया था। कैम्प में सैकड़ों वनवासी भाइयों की आँखों की जाँच की गई तथा मुम्बई से आये चिकित्सकों के दल ने सौ से अधिक लोगों के ऑपरेशन भी किये गये। इसी अवसर पर चिकित्सालय परिसर में संचालित ध्यान केन्द्र में स्वामी विवेकानन्द की पाँच फीट मूर्ति का अनावरण पूज्य साध्वी ऋतम्भरा ने किया।

स्वयंसेवक विद्यार्थियों ने निकाला पथ संचलन

गणतंत्र दिवस के पावन पर्व पर उदयपुर शहर के कक्षा ६ से १० तक के विद्यार्थी स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला। साध्वी ऋतम्भरा ने सभी स्वयंसेवकों को सम्बोधित किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि हमारा लक्ष्य माँ भारती के आँगन को भव्य, दिव्य और वैभवशाली बनाना है। संचलन में लगभग एक हजार विद्यार्थी स्वयंसेवकों ने भाग लिया।

जसनगर में भव्य रूट-मार्च

गत ४ फरवरी को जसनगर (नागौर जिला) के स्वयंसेवकों ने पथ संचलन निकाला। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में महंत श्री पुष्कर नाथ जी महाराज उपस्थित थे।

एकात्म मानव दर्शन पर विचार गोष्ठी

गत २४ जनवरी को कलकत्ता के 'कुमार सभा पुस्तकालय' और 'योगक्षेम संस्था' एवं 'दीनदयाल शोध संस्थान' के संयुक्त तत्वावधान में एक गोष्ठी का आयोजन किया गया। 'एकात्म मानव दर्शन' विषय पर यह गोष्ठी रखी गई थी।

कार्यक्रम के मुख्य वक्ता राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह श्री भैय्या जी जोशी थे। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि पं.दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय मनीषा के सार तत्व को अपने आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन में समाहित कर एकात्म मानव दर्शन का प्रारूप प्रस्तुत किया। वह भव्य भारत की भावी दिशा का मूल मंत्र है। कार्यक्रम की अध्यक्षता त्रिपुरा के राज्यपाल प्रो.तथागत राय ने की।

गोहाटी में जनजातीय युवा शिविर का आयोजन

गत १ से ५ फर. तक गोहाटी में जनजातियों के नौजवानों का एक शिविर आयोजित हुआ। यह शिविर गारचुक स्थित प्राद्यौगिकी एवं प्रबंधन संस्थान में रखा गया था। जनजातीय युवकों में नेतृत्व क्षमता विकसित करने एवं वनवासी प्रतिभाओं को आगे लाने का इस शिविर का उद्देश्य था। पूर्वोत्तर के आठ राज्यों की सौ जनजातियों के ४०० से अधिक युवाओं ने इसमें भाग लिया। हेरिटेज फाउण्डेशन ने पाँच दिनों का यह आयोजन किया था।

ज्ञात हो कि हेरिटेज फाउण्डेशन एक गैर सरकारी ट्रस्ट है जो पूर्वोत्तर में जनजातियों के सशक्तीकरण के लिए समर्पित है। विभिन्न जनजातियों पर साहित्य प्रकाशन, गोष्ठी, कार्यशाला आदि गतिविधियों का आयोजन फाउण्डेशन द्वारा किया जाता है।

अजमेर में समन्वय संस्थान की संगोष्ठी

गत ३ व ४ फरवरी को 'पृथ्वीराज चौहान ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक शोध केन्द्र' तथा अखिल भारतीय संस्कृति समन्वय संस्थान के संयुक्त तत्वावधान में दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। यह आयोजन अजमेर के महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के 'स्वराज सभागार' में रखा गया था। गोष्ठी का विषय'इतिहास में गुर्जर समाज : पुनरावलोकन' था।

उत्तर चित्र पहचानो- माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (श्रीगुरुजी)

जन्म दिवस पर शत्-शत् नमन

महान क्रांतिकारी

सरदार अजीत सिंह

२३ फरवरी

(भगत सिंह इनके भतीजे थे)

(१८८१-१९४७)

भक्तिमार्ग से समाज जागरण करने वाले

चैतन्य महाप्रभु

फाल्गुन पूर्णिमा (१ मार्च)

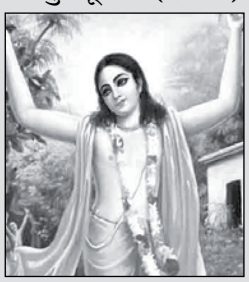

(१४८६-१५३३)

मीराबाई

फाल्गुन पूर्णिमा (१ मार्च)

(१५०४-१५७०)

कीर्तन से जागरण करने वाले

संत तुकाराम

चैत्र कृष्ण २ (३ मार्च)

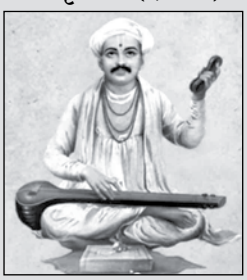

(१६०८-१६५०)

सामाजिक समरसता का प्रतीक कुंभ

अंक संदर्भ- १ जनवरी २०१८

अंक में प्रकाशित 'मरुभूमि का कुंभ सुईंया पोषण' आमुख कथा रोचक लगी। हमारे देश में पारम्परिक कुंभ से हटकर भी क्षेत्र विशेष के भी कुंभ आयोजित होते हैं। यह पहली बार पता लगा।

-हुकमचन्द चौधरी, *सपोटरा,करौली*

क्षेत्रीय कुम्भों की ऐसी जानकारी अन्य पत्र-पत्रिकाओं में कम ही पढ़ने को मिलती है।

-राधेश्याम शर्मा , *उदयपुर*

बलिदानी वीर गेंद सिंह

स्वतंत्रता संग्राम के अमर बलिदानी वीर गेंदसिंह के विषय में पढ़ा। गुमनामी के अंधेरों में खोए मातृभूमि के सच्चे सपूतों का राष्ट्रीय चरित्र उजागर करने के लिए पाथेय कण का साधुवाद।

-आशुतोष शर्मा, *विद्याधर नगर, जयपुर*

स्वतंत्रता सेनानी वीर गेंदसिंह का प्रसंग प्रेरक लगा। अज्ञात राष्ट्रभक्तों से युवा पीढ़ी को अवगत कराने का यह अच्छा प्रयास है।

-श्यामलाल लखारा, *बावड़ी, जोधपुर*

छत्तीसगढ़ के अमर बलिदानी वीर गेंदसिंह के नाम से अब तक अपरिचित था। उन पर दिया गया पूरा विवरण पढ़कर मन प्रफुल्लित हो उठा।

-मस्तराम गहलोत, *कलोल,गुजरात*

प्रेरणास्पद प्रसंग

अंक में 'बाल जगत' स्तम्भ में प्रकाशित स्वतंत्रता सेनानी बाल गंगाधर तिलक का प्रसंग प्रेरणादायक लगा। ऐसे प्रसंग बच्चों में अच्छे संस्कारों का निर्माण करते हैं।

-टेकचन्द शर्मा, *झुन्झुनू*

स्वामी रामानन्द

सामाजिक समरसता तथा परावर्तन के अग्रदूत स्वामी रामानन्द पर दिया गया प्रसंग शिक्षाप्रद था। स्वामीजी के विचार आज भी प्रासंगिक हैं।

-देवकीनन्दन शर्मा, *भगेगा (सीकर)*

सार्थक अभियान

सामाजिक विषमताओं को दूर करने के लिए संघ के स्वयंसेवकों के द्वारा एक मन्दिर, एक कुंआ, एक श्मशान का अभियान एक सार्थक पहल है।

-आर.प्रसन्नचन्द्र चोरड़िया, *चेन्नई*

नवीन स्तम्भ

इस अंक में नया स्तम्भ 'पक्ष का विचार' पढ़ने को मिला। यह वाकई हमें सोचने और करने की प्रेरणा देता है।

- प्रभुसिंह राणावत, *साण्डेराव,पाली*

ज्ञानवर्धक प्रश्नोत्तरी

'अपने देश को हम कितना जानते हैं' तथा 'बाल प्रश्नोत्तरी' ज्ञानवर्धन करने वाली जानकारी से ओतप्रोत होती है। बच्चे इनको पढ़कर स्वयं के सामान्य ज्ञान का मूल्यांकन करते हैं।

- राहुल अग्रवाल, *अलवर*

हिन्दू संस्कृति

अंक में प्रकाशित 'विश्व विजयी हिन्दू संस्कृति' स्तम्भ में दी गई जानकारी एकदम नवीन थी।

-मदन चौधरी, *सोडाला, जयपुर*

वीर सावरकर

अंक में चित्रकथा के माध्यम से दी जा रही वीर सावरकर की जीवन गाथा प्रेरणादायी है। ऐसे देशभक्तों के जीवन से राष्ट्रभक्ति के गुणों को अपने जीवन में धारण करने की प्रेरणा मिलती है।

- सीमा तोंदवाल, *बीकानेर*

उत्तर बाल प्रश्नोत्तरी - १.ब, २.द, ३.अ, ४.स, ५.द, ६.अ,७.अ, ८.अ,९.स, १०.स

आगामी पक्ष (१ से १५ मार्च २०१८) के विशेष अवसर

(फाल्गुन शुक्ल १४ से चैत्र कृष्ण १३ तक)

जन्मदिवस

फाल्गुन पूर्णिमा (इस बार १ मार्च)– चैतन्य महाप्रभु जयन्ती (१४८६)

– भगवान श्रीकृष्ण की अनन्य भक्त मीराबाई की जयन्ती (१५०४)

चैत्र कृष्ण २ (इस बार ३ मार्च)– सन्त तुकाराम जयन्ती

चैत्र कृष्ण ६ (इस बार ७ मार्च)– महाराष्ट्र में जन्मे प्रसिद्ध संत एकनाथ जी की जयंती

चैत्र कृष्ण ८ व १० (इस बार ९व १२ मार्च)– प्रथम तीर्थंकर श्री ऋषभदेव तथा बीसवें तीर्थंकर मुनि सुव्रतनाथ जी की जयंती

महत्वपूर्ण अवसर

७ मार्च (१९२२)– नीमड़ा का नरसंहार– राजस्थान के नीमड़ा गाँव में मोतीलाल तेजावत के नेतृत्व में किसानों और भीलों की सभा पर अंग्रेजों ने अंधाधुंध गोलीबारी की जिसमें सैकड़ों लोग शहीद हुये।

८ मार्च (१५३५)– मुगल आक्रांता सुल्तान बहादुरशाह के समय चित्तौड़ का दूसरा साका

– अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस

१४ मार्च (१८२३)– महाराजा रणजीत सिंह के सेनापति बाबा फूलासिंह की पेशावर विजय

१५ मार्च – विश्व उपभोक्ता अधिकार दिवस

पुण्यतिथि एवं बलिदान दिवस

८ मार्च (१९९४)

राष्ट्र सेविका समिति की द्वितीय प्रमुख संचालिका सरस्वती ताई आप्टे की पुण्यतिथि

११ मार्च (१६८९)

छत्रपति शिवाजी के वीर पुत्र सम्भा जी का बलिदान दिवस

पुस्तकें आपकी सबसे बड़ी मित्र हैं

इसलिए पढ़ें और पढ़ायें

रामचरित मानस से घर-परिवार में संस्कार

रामचरित मानस प्रभु श्रीराम की जीवन–गाथा है। श्रीराम मर्यादा–पुरुषोत्तम हैं, इसलिये तुलसी–कृत रामचरित मानस के प्रत्येक पृष्ठ पर घर–परिवार को संस्कारित करने और मर्यादित रखने की चौपाइयाँ हैं। इन्हीं चौपाइयों से आज के बालकों,नौजवानों एवं प्रौढ़ों को भारतीयता के संस्कार देने का उपक्रम 'कुटुम्ब प्रबोधन' पुस्तक में है। बड़ों का सम्मान, गुरु का सम्मान, आज्ञा पालन, बड़प्पन, राष्ट्रभक्ति आदि के संस्कार मानस की चौपाइयों के आधार पर बड़े सरल एवं ग्राह्य तरीके से देने का सुन्दर प्रयास इस पुस्तक में है।

कुटुम्ब प्रबोधन
ले. हनुमान सिंह राठौड़
प्रकाशक– ***अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ***
शैक्षिक महासंघ सदन, ६०६/१३ कृष्णा गली नं.९, मौजपुर दिल्ली– ११००५३
सहयोग राशि – ₹ ८०/–

एक वयोवृद्ध प्रचारक का जीवन और कार्य

श्री धनप्रकाश जी के १०१ वें जन्म दिवस पर गत १० जन. को उनके जीवन पर एक स्मारिका का लोकार्पण भी किया गया। इसमें उनके कुछ लेख तथा प्रसंग शामिल किये गये हैं।

धनप्रकाश जी ने वेद तथा वेदान्त का गहन अध्ययन किया है। आपके चिन्तन तथा लेखन में आध्यात्मिकता का पुट स्पष्ट दिखता है। ऐसे लेखों के समावेश से 'ध्येय पथिक धनप्रकाश त्यागी' न केवल पठनीय बल्कि संग्रहणीय भी बन गई है। धनप्रकाश जी के प्रेरणास्पद जीवन प्रसंग इसमें आकर्षक रूप से प्रस्तुत किये गये हैं।

ध्येय पथिक
धनप्रकाश त्यागी
संपादक– रामस्वरूप अग्रवाल
प्रकाशक – *मा. धनप्रकाश त्यागी शतायु समारोह समिति, जयपुर*
पृष्ठ – ९८
सहयोग राशि – ₹ १००/–

क्रांतिकारियों की गाथा

यह पुस्तिका बालकों के लिये है। भारत की आजादी के लिये संघर्ष करने वाले १८ क्रांतिकारियों का इसमें परिचय दिया गया है। चाफेकर बन्धुओं के अद्‌भुत बलिदान की गाथा अन्त में है। तात्या टोपे के आलेख में बताया गया है कि पाड़ौन के राजा मानसिंह ने गद्‌दारी की और तात्या टोपे को गिरफ्तार करा दिया। इसके पुख्ता प्रमाण हैं कि नारायण राव भागवत ने तात्या टोपे के रुप में अंग्रेजों के सामने समर्पण किया था। फाँसी भी नारायण राव भागवत को ही हुई। तात्या टोपे १९०९ तक जीवित रहे।

जो शहीद हुए है उनकी जरा याद करो कुर्बानी
संकलनकर्ता– विजय कुमार
प्रकाशक– *सुरुचि प्रकाशन, केशवकुंज झण्डेवाला, दिल्ली*
मूल्य – ₹ १५/–

भगिनी निवेदिता के प्रसंग

वर्ष २०१७–१८ से भगिनि निवेदिता के सार्द्ध शताब्दी वर्ष के रूप में मनाया जा रहा है। इस अवसर पर इस पुस्तक 'राष्ट्रीयता की प्रखर अग्नि भगिनि निवेदिता' का प्रकाशन समयोचित है। पुस्तक में भगिनि निवेदिता का सम्पूर्ण जीवन वृत्तांत, विशेष रूप से सेवा कार्य, स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान तथा भारतीय कला नवोत्थान द्वारा कैसे वह माता शारदा देवी की प्यारी पुत्री तथा युवाओं के लिए प्रेरणा स्रोत बनी, का विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में भगिनि निवेदिता की जीवन यात्रा के प्रेरक प्रसंग निश्चित रूप से हमें अपने राष्ट्र एवं उसकी संस्कृति के प्रति आदर के साथ– साथ प्रत्येक मानव के प्रति सेवाभाग जाग्रत करने वाले हैं।

राष्ट्रीयता की प्रखर अग्नि भगिनी निवेदिता
संकलन– डॉ. मधु शर्मा
प्रकाशक – ज्ञान गंगा प्रकाशन, मधुकर भवन, बी–१९, न्यू कॉलोनी, जयपुर
मूल्य – ₹ १५/–

विज्ञापन